राजधानी वाटिका, पटना





पर्यावरण एवं वन विभाग, बिहार

राजधानी वाटिका, पटना

मुख्य सचिवालय भवन के सामने पर्यावरण एवं वन विभाग द्वारा राजधानी वाटिका का विकास किया गया है। इस वाटिका में दर्शकों के लिये उपलब्ध कुल क्षेत्रफल 9.18 हेक्टर है। यह वाटिका दो भागों में है। देशरत्न मार्ग के उत्तर की ओर पड़ने वाले हिस्से का क्षेत्रफल 5.7 हेक्टर है तथा दक्षिण की ओर पड़नेवाले हिस्से का क्षेत्रफल 36. 48 हेक्टर है। इस वाटिका का नामकरण **श्री नीतीश कुमार, माननीय मुख्यमंत्री, बिहार** द्वारा किया गया है।

इस पार्क को विकसित करने का मुख्य उद्देश्य मुख्य सचिवालय के सामने पड़नेवाले स्थल का सौंदर्यीकरण करना है। यह पार्क संजय गाँधी जैविक उद्यान में प्रातःकालीन भ्रमण करने वाले दर्शकों को पैदल भ्रमण हेतु एक विकल्प उपलब्ध कराता है। यह पार्क बच्चों के खेल–कूद तथा दर्शकों के व्यायाम एवं स्वास्थ्यर्वद्धन हेतु उचित स्थान भी है। प्रातः कालीन भ्रमण करने वाले दर्शकों हेतु यहाँ करीब तीन हजार मीटर लम्बा jogging track उपलब्ध है जो पार्क के दोनों हिस्सों में है और अंडर पास द्वारा एक दूसरे से जुड़ा है। पार्क के दोनों हिस्सों में तालाब है जो पक्षियों को प्राकृतिक अधिवास भी प्रदान करते हैं। इस पार्क को बनाने में न्यूनतम कंक्रीट निर्माण किया गया है। पार्क का विकास प्राकृतिक एवं परिस्थितिकीय पहलुओं को ध्यान में रख कर किया गया है। पार्क में विभिन्न प्रजातिओं के करीब 3000 (तीन हजार) पौधों को लगाया गया है।

पार्क के दक्षिणी हिस्से का विकास विभिन्न धर्मों एवं पौराणिक शास्त्रों में वर्णित वृक्षों के महत्व एवं उनके मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर किया गया है। इस वाटिका में बुद्धा वाटिका, जो महात्मा गौतम बुद्ध के अष्टांग मार्ग पर आधारित है, का निर्माण किया गया है। इस वाटिका में हिन्दू विचारधारा एवं ज्योतिष विद्या के आधार पर नक्षत्र वन, पंचवटी वन, राशि वन का निर्माण किया गया है। इस्लामिक विचारधारा के आधार पर चाहरबाग विकसित किया गया है तथा सिक्ख धर्म की विचारधारा के प्रमुख प्रतीक 'खंडा' के आधार पर गुरू वाटिका का निर्माण किया गया है। जैन धर्म के 24 तीर्थांकरों एवं उनसे संबंधित वृक्षों के आधार पर तीर्थांकर वन विकसित किया गया है।

विभिन्न थीम पार्कों के संबंध में संक्षिप्त विवरणी निम्नवत् हैः–

(1) बुद्धा वाटिका

बिहार बौद्ध धर्म की भूमि है। बौद्ध धर्म में 'अष्टांग मार्ग' विचारधारा महात्मा बुद्ध की मुख्य शिक्षाओं में से एक है। बौद्ध धर्म के अनुसार अष्टांग मार्ग दुःखों के अन्त (Cessation of Sufferings) एवं आत्मज्ञान (Self Awakening) की दिशा में ले जाने का मार्ग है। बौध धर्म में बताये गये आठ 'अष्टांग मार्ग' निम्नवत है।

1) सम्यक दृष्टि
2) सम्यक संकल्प
3) सम्यक वाक्
4) सम्यक कर्यांत
5) सम्यक अजीवा
6) सम्यक व्यायाम
7) सम्यक स्मृति
8) सम्यक समाधि

बुद्ध धर्म में इन अष्टांग मार्गों को धर्मचक्र (Chariot wheel) के रूप में व्यक्त किया जाता है जिसमें धर्म चक्र की एक तीली (spoke) एक अष्टांग मार्ग को व्यक्त करती है।

इस बुद्ध वाटिका में धर्म चक्र को आठ तीलियों वाले चक्र के रूप में हरे एवं लाल रंग के हेज द्वारा बनाया गया है। इस बुद्ध वाटिका में लगाये गये वोधि वृक्ष गया के वोधि वृक्ष से प्राप्त कर लगाये गये हैं।

(2) नक्षत्र वन

नक्षत्र की अवधारणा प्राचीन भारतीय खगोलशात्रियों द्वारा काल निर्धारण की दिशा में किया गया विलक्षण योगदान है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा 27.3 दिनों में कर लेता है। इसी के आधार पर प्राचीन भारतीय खगौलशात्रियों एवं ज्योतिषवेत्ताओं ने आकाश समूह में उपस्थित सभी तारासमूहों को 27 भागों में विभक्त किया है तथा प्रत्येक भाग (लगभग $13^{0}20'$) में कुछ विशिष्ट तारों की पहचान कर उन्हें नक्षत्र का नाम दिया है। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार 27 नक्षत्र हैं तथा ग्रहों, उपग्रहों की स्थिति इन नक्षत्रों के आधार पर ही निर्धारित की जाती है। 12 राशियों में प्रत्येक राशि में 2 या 3

नक्षत्रों का प्रभाव रहता है। प्राचीन भारतीय पौराणिक शास्त्रों एवं ज्योतिष शास्त्रों में आकाश में स्थित 27 नक्षत्रों का संबंध पृथ्वी पर स्थित वृक्षों से जोड़ा गया है। 27 नक्षत्र धरती पर 27 संगत वृक्ष प्रजातियों के रूप में विद्यमान हैं। प्राचीन भारतीय शास्त्रों के अनुसार धरती पर इन वृक्षों की सेवा करने से उस नक्षत्र की सेवा होती है तथा किसी व्यक्ति विशेष के जन्म के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र की सीध में होता है उस नक्षत्र से संबंधित वृक्ष का पालन पोषण, रक्षा, पूजन एवं संवर्धन करने से संबंधित व्यक्ति का कल्याण होता है तथा क्षति पहुंचाने से हानि होती है।

इस नक्षत्र वन में प्रत्येक नक्षत्र से संबंधित वृक्ष को लगाया गया है तथा प्रत्येक राशि को प्रभावित करने वाले नक्षत्रों के नाम अंकित किये गये हैं।

नक्षत्रों, राशियों एवं उससे संबंधित वृक्षों की सूची :–

राशि	नक्षत्र	वृक्ष का नाम	
		हिन्दी नाम	वैज्ञानिक नाम
मेष	अश्विनी	कुचिला	Strychnos vomica
	भरणी	आंवला	Emblica officinalis
	कृतिका	गूलर	Ficus glomerata
वृषभ	कृतिका	गूलर	Ficus glomerata
	रोहिणी	जामुन	Syzygium cumini
	मृगशीर्ष	खैर	Acacia catechu
मिथुन	आर्द्रा	शीशम	Dalbergia sisoo
	पुनर्वसु	बांस	Dendrocalamus stricus
कर्क	पुष्य	पीपल	Ficus religiosa
	आश्लेषा	नागचंपा	Michellia champaka
	मघा	बरगद	Ficus bengalensis
सिंह	मघा	बरगद	Ficus bengalensis
	पूर्वा फाल्गुनी	ढाक	Butea monosperma
	उत्तरा फाल्गुनी	पाकड़	Ficus rumphii
कन्या	उत्तरा फाल्गुनी	पाकड़	Ficus rumphii
	हस्त	जुही	Jasminum auriculatum
	चित्रा	बेल	Aegel marmelos
तुला	चित्रा	बेल	Aegel marmelos
	स्वाति	अर्जुन	Terminalia arjuna

	विशाखा	गूगल	Gymnosporia spinosa
वृश्चिक	विशाखा	गूगल	Gymnosporia spinosa
	अनुराधा	मौलश्री	Mimusops elengi
	ज्येष्ठा	सेमल	Bombax malabaricum
धनु	मूल	अमलताश	Cassia fistula
	पूर्वाषाढ़ा	जलवेतस	Calamus rotang
मकर	उत्तराषाढ़ा	कटहल	Artocarpus integrifolia
	श्रवण	मदार	Callitropis procera
	धनिष्ठा	शमी	Prosopis cineraria
कुंभ	धनिष्ठा	शमी	Prosopis cineraria
	शतभिषा	कदम्ब	Authocephalus cadmbe
	पूर्व भाद्रपद	आम	Mangifera indica
मीन	उत्तरा भाद्रपद	नीम	Azadirachta indica
	रेवती	महुआ	Madhuca indica

(3) तीर्थांकर वन

जैन धर्म में 24 तीर्थांकर हुए हैं। इन तीर्थांकरों ने विभिन्न वृक्षों के नीचे ज्ञान प्राप्त किया। ये वृक्ष ''केवली वृक्ष'' के नाम से जाने जाते हैं।

यह तीर्थांकर वन कल्पवृक्ष की अवधारणा पर आधारित है जिसमें देवी देवताओं के निर्धारित स्थल पर संबंधित वृक्षों को लगाया गया है। ऐसा विश्वास है कि इन वृक्षों के वृक्षारोपण, संवर्धन एवं पूजन से तीर्थांकरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

तीर्थांकर वन में तीर्थांकर एवं लगाये गये संबंधित वृक्षों का विवरण

क्र. सं.	तीर्थांकर का नाम	वृक्ष का नाम	
		हिन्दी नाम	वैज्ञानिक नाम
1	श्री श्रृषभ देव स्वामी	बरगद	Ficus bengalensis
2	श्री अमृतनाथ स्वामी	सप्तनर्णी	Alstonia scholaris
3	श्री संभवनाथ स्वामी	साल	Shorea robusta

4	श्री अभिनंदन स्वामी	चिरौजी	Buchanania lanzan
5	श्री सुमति स्वामी	प्रियंगू	Callicarpa macrophylla
6	श्री पदमप्रभ स्वामी	बरगद	Ficus bengalensis
7	श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी	सिरिस	Albizia lebbeck
8	श्री चन्द्रप्रभ स्वामी	चंपा	Calophyllum inophyllum
9	श्री सुविधिनाथ स्वामी	बेल	Aegel marmelos
10	श्री शीतलनाथ स्वामी	पीपल	Ficus religeosa
11	श्री श्रेयास स्वामी	अशोक	Saraca indica
12	श्री वासुपूज्य स्वामी	लोध	Symplocos racemosa
13	श्री विमलनाथ स्वामी	जामुन	Syzygium cumini
14	श्री अनन्तनाथ स्वामी	अशोक	Saraca indica
15	श्री धर्मनाथ स्वामी	ढाक	Butea monosperma
16	श्री शान्तिनाथ स्वामी	देवदार	Cedrus deodara
17	श्री कन्थुनाथ स्वामी	लोध	Symplocos racemosa
18	श्री अरनाथ स्वामी	आम	Mangifera indica
19	श्री मल्लिनाथ स्वामी	अशोक	Saraca indica
20	श्री सुब्रत स्वामी	चंपा	Michelia champaca
21	श्री नमिनाथ स्वामी	मौल श्री	Minusops elengi
22	श्री नेमिनाथ स्वामी	बेदमुश्क	Salix caprea
23	श्री पार्श्वनाथ स्वामी	दवि	woodfordia fruticosa
24	श्री महावीर स्वामी	साल	Shorea robusta

(4) चाहर बाग

चाहर बाग इस्लामी बाग रूपांकन का एक प्रसिद्ध माध्यम है। फारसी भाषा में ''चाहर बाग'' का आशय 'चार बाग' (Four Gardens) से है। चार बाग के आलेख में केन्द्र में पानी के स्रोत से चार

दिशाओं में पानी बहता है। पानी का चार दिशाओं में बहना जन्नत की चार नदियों (Four rivers of paradise) को व्यक्त करता है।

राजधानी वाटिका में बनाये गये चाहर बाग में केन्द्र से चार दिशाओं में पानी बहता है। इस बाग में बनाये गये बाग भी चार हिस्सों में है। चारों बागों में पवित्र कुरान में वर्णित वृक्षों को लगाया गया है। पवित्र कुरान में अंजीर (Fig tree) जैतून (olive), अनार (Pomegranate) एवं खजूर (Date palm) के वृक्षों का वर्णन है।

(5) गुरू वाटिका

गुरू वाटिका में खालसा के प्रतीक चिन्ह ''खंडा'' को हरे एवं लाल रंग के हेज के माध्यम से दर्शाया गया है।

''खंडा'' सिक्ख विचारधारा का मुख्य प्रतिक चिन्ह है। खंडा वस्तुतः चार शस्त्र जो गुरू गोविन्द सिंह जी के समय प्रयोग में लाये जाते थे, का संयुक्त निरूपण है। केन्द्र में एक द्वि–धारी तलवार है, जो ईश्वर की सृजनात्मक शक्ति का प्रतीक है। इस प्रतीक चिन्ह में केन्द्र की द्वि–धारी तलवार के बाहर दो अन्य तलवारें हैं। बांयी ओर की तलवार अध्यात्मिक प्रभुसत्ता (पीरी) तथा दायीं ओर की तलवार राजनैतिक प्रभुसत्ता (मीरी) को व्यक्त करती है। केन्द्र का वृत पीरी एवं मीरी के मध्य संतुलन होना चाहिए को व्यक्त करता है। बीच का वृत एकता, न्याय की एकरूपता, मानवता एवं अमरता का प्रतीक भी है।

(6) राशि वन

प्राचीन भारतीय पौराणिक शास्त्रों में वर्णित 27 नक्षत्रों को 12 राशियों के समूह में रखा गया है। प्रत्येक राशि में 2 या तीन नक्षत्र रखे गये हैं। यह माना जाता है कि प्रत्येक राशि में पड़ने वाले नक्षत्र व्यक्ति के जीवन, उसके व्यक्तित्व तथा उसके कल्याण को प्रभावित करते हैं। प्रत्येक राशि को वृक्षों से जोड़ा गया है। ऐसी मान्यता है कि राशि विशेष के व्यक्ति द्वारा राशि से संबंधित वृक्ष लगाने, पालन पोषण करने, रक्षा, पूजन एवं संवर्धन करने से उस व्यक्ति विशेष का कल्याण होता है।

इस राशि वन में प्रत्येक राशि से संबंधित एक वृक्ष को लगाया गया है तथा प्रत्येक वृक्ष को ज्योतिषशास्त्र में वर्णित राशियों के आलेख के अनुसार संगत राशि के हिस्से में लगाया गया है।

राशियों एवं उससे संबंधित वृक्षों की सूची :–

क्र. सं.	राशि	वृक्ष का नाम	
		हिन्दी नाम	वैज्ञानिक नाम
1	मेष	आंवला	Emblica officinalis
2	वृषभ	गूलर	Ficus- glomerata
3	मिथुन	बांस	Dendrocalamus strictus
4	कर्क	पीपल	Ficus religiosa
5	सिंह	ढाक	Butea monosperma
6	कन्या	बेल	Aegel marmelos
7	तुला	अर्जुन	Terminalia arjuna
8	वृश्चिक	सेमल	Bombax malabaricum
9	धनु	कटहल	Artocarpus integrifolia
10	मकर	शमी	Prosopis cineraria
11	कुंभ	कदम्ब	Authocephalus cadamba
12	मीन	महुआ	Madhuca indica

(7) पंचवटी वन

भारतीय प्राचीन पौराणिक शास्त्रानुसार यह संसार पाँच तत्वों से मिलकर बना है। ये तत्व हैं पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश एवं वायु। मानव शरीर में भी पाँच संवेदी तन्त्रिकाएँ अर्थात् आँख, नाक, कान, त्वचा एवं जिह्वा है। पौराणिक शास्त्रानुसार पाँच तत्वों को 5 वृक्षों से जोड़ा गया है तथा ऐसा माना जाता है कि इन पाँच वृक्षों के संवर्धन से 5 तत्वों का विकास होता है तथा मानव शरीर में उपस्थित पाँचों संवेदी तंत्रिकाएँ भी प्रभावित होती है।

शास्त्रों के अनुसार पीपल का वृक्ष शुद्ध हवा प्रदान करता है। बेल का वृक्ष विभिन्न चिकित्साओं में प्रयुक्त होता है। बरगद का वृक्ष ठंढ़ी हवा प्रदान करता है तथा अशोक का वृक्ष शोक (pain) को दूर करता है। आँवला के विभिन्न चिकित्सकीय गुण हैं तथा इसका वर्णन आर्युवेद में भी है।

पंचवटी वन में लगाये जाने वाले वृक्षों का विवरण :–

हिन्दी नाम	वैज्ञानिक नाम
बेल	Aegel marmelos
बरगद	Ficus bengalensis

अशोक	Saraca indica
आँवला	Embilica officinalis
पीपल	Ficus religeosa

राजधानी वाटिका के अन्य आकर्षण :–

1) प्रातः कालीन भ्रमण करने वाले पर्यटकों के लिये राजधानी वाटिका में निःशुल्क प्रवेश।
2) आधुनिक झूलों, स्लाइडर्स, टनल स्लाइडर्स के साथ निःशुल्क शिशु उद्यान।
3) पर्यटकों हेतू नौकायन की व्यवस्था।
4) शारीरिक व्यायाम हेतू कसरत उपकरण।
5) कला प्रदर्शन हेतू एम्फीथियेटर / खुला रंगमंच
6) योग करने हेतू चबूतरा।
7) पर्यटकों के अल्पाहार हेतू कैफेटेरिया (Kiosk) की व्यवस्था ।
8) पर्यटकों हेतू पर्याप्त संख्या में बाँस शेड एवं बेंच।

राजधानी वाटिका में प्रवेश शुल्क :–

प्रवेश शुल्कः– रू. 5 प्रति व्यक्ति

मासिक प्रवेश शुल्कः– रू. 60 प्रति व्यक्ति प्रतिमाह

प्रातःकालीन भ्रमण हेतू निःशुल्कः– प्रातः 5 बजे से प्रातः 8 बजे तक

नौकायन शुल्क :– दो सीटर नावः– रू. 30/– प्रति आधा घंटा

चार सीटर नावः– रू. 50/– प्रति आधा घंटा

<u>प्रवेश समयः–</u> माह मार्च से अक्टूबर तक :– प्रातः 8 बजे से सायं 8 बजे तक।

माह नवम्बर से फरवरी तकः– प्रातः 9 बजे से सायं 7 बज तक।

सम्पर्क सूत्रः– (1) वन प्रमंडल पदाधिकारी,
पटना वन प्रमंडल, पटना।
संयुक्त वन भवन, नेहरू नगर, पटना–13.
फोन नं. (0612) 2263256 (कार्या)
9431815971 (मो)

(2) वनों के क्षेत्र पदाधिकारी,
पटना पश्चिमी प्रक्षेत्र, राजधानी वाटिका (दक्षिणी) परिसर

फोन नं. 9431815973